इकाई–4

बेकारी

परिचय :

रोजगार एक ऐसा क्रियाकलाप है जिससे कोई व्यक्ति जीवन–यापन के लिए साधन अर्जित करता है अर्थात् यह साधन नकद अथवा वस्तु के रूप में हो सकता है, यही अर्जित साध्य उसकी **आमदनी** कहलाती है। जो व्यक्ति ऐसा क्रिया–कलाप करने में असफल रहते हैं तो वे **बेकार** या **बेरोजगार** कहलाते हैं।

प्रायः बेकारी तथा गरीबी साथ–साथ चलते हैं क्योंकि जो व्यक्ति जीविकोपार्जन में असमर्थ होते हैं, वे निश्चय ही गरीब होते हैं।

जब व्यक्ति को कार्य करने की इच्छा हो और उसे मनपसंद कार्य नहीं मिल पाता है तो वे बेकारी का दंश झेलते हैं। कभी–कभी इच्छानुसार काम न मिलना भी बेकारी को प्रकट करता है। भारत एवं बिहार राज्य में बेकारी के कई किस्म पाए जाते हैं, जिसकी विस्तृत चर्चा इस अध्याय में आगे करेंगे।

इस बेकारी की समस्या को समाप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा केन्द्र प्रायोजित अनेक कार्यक्रम राज्य के अन्तर्गत चलाये जा रहे हैं, जिस पर भी विस्तृत चर्चा हम इस अध्याय में आगे करेंगे।

उद्देश्य :

भारत में बेरोजगारी एक विकराल समस्या है। देश में बेकारी का क्या स्वरूप है और यह कितने प्रकार की है, यह जानना आवश्यक है। जानकारी के आधार पर ही इसे दूर करने के उपाय सुझाएँ जा सकते हैं। विकसित एवं अल्पविकसित राष्ट्र में पायी जाने वाली बेकारी भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है इसलिए इसके निराकरण हेतु अपनाये गये उपाय भी दोनों ही राष्ट्रों में भिन्न होंगे ।

इस विषयवस्तु का अध्ययन भारत जैसे विकासशील देश एवं बिहार जैसे गरीब राज्य के लिए और भी ज्यादा आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यहाँ पर अनेक प्रकार की बेकारी विद्यमान है जिसका मूल समझना नितांत आवश्यक है जिसके निराकरण के लिए सही उपाय एवं नीति अपनायी जा सके ।

© BSTBPC Not to be Published

बेकारी की परिभाषा :

बेकारी एक आर्थिक समस्या है, जिसका गरीबी से घनिष्ठ संबंध है। अर्थव्यवस्था में व्यक्ति **प्रचलित-मजदूरी** पर काम करना चाहता हो किन्तु उसे काम नहीं मिले तो उसे बेकार या बेरोजगार कहा जाता है। दूसरें शब्दों में कहा जाय तो काम चाहनेवाले व्यक्तियों को इच्छा व योग्यता होने पर भी जब प्रचलित मजदूरी पर काम रहने पर भी नहीं मिल पाये तो हम ऐसी स्थिति को बेकारी की स्थिति कहते हैं। **अतः बेकारी की धारणा में दो मुख्य बातें आती हैं–**

दो मुख्य बातें हैं–

(1) काम खोजना

(2) काम के लिए उपलब्ध रहना ।

इसे हम एक उदाहरण से समझेंगे–

'आकाश' की माँ **'सीता देवी'** अपने घरेलू काम काज और बच्चों की देखभाल तथा खेती के काम में अपने पति **'किशन'** की मदद करती थी। आकाश का भाई **'जीतू'** और बहन **'सीतू'** अपना समय खेलने और घूमने फिरने में बिताते थे। क्या आप सीता देवी, जीतू या सीतू को बेरोजगार कह सकते हैं? यदि नहीं तो क्यों?

© BSTBPC Not to be Published

बेकारी उस परिस्थिति को कहते हैं जब **प्रचलित-मजदूरी** की दर पर काम के इच्छुक लोगों को रोजगार नहीं मिलता हो। सीता देवी की रुचि अपने घर के बाहर काम करने में नहीं है। जीतू और सीतू बहुत छोटे हैं और उनकी गिनती श्रम-शक्ति की जनसंख्या में नहीं हो सकती और न ही जीतू और सीतू और सीता देवी को बेकार या बेरोजगार कहा जा सकता है। श्रम बल जनसंख्या में वे लोग शामिल किए जाते हैं जिनकी उम्र **15 वर्ष से 59 वर्ष** के बीच की हो। आकाश के भाई और बहन (जीतू-सीतू) इस आयु वर्ग में नहीं आते। इसलिए उन्हें बेरोजगार नहीं कहा जा सकता। आकाश की माँ सीता देवी को भी बेरोजगार नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह घर के बाहर काम कर पारिश्रमिक प्राप्त करने को इच्छुक नहीं है। आकाश के दादा-दादी या नाना-नानी जिनका यद्यपि इस कहानी में वर्णन नहीं है उन्हें भी बेरोजगार नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वे श्रम-बल जनसंख्या आयुवर्ग (15-59) में नहीं है बल्कि वृद्ध हो चुके हैं।

भारत तथा बिहार राज्य में वर्तमान श्रम-शक्ति की प्रतिशत मात्रा **सारणी एक (1)** में दिखायी गयी है ।

सारणी-1

भारत एवं बिहार में श्रम-शक्ति

1999 – 2000

श्रम-शक्ति प्रतिशत में,

देश/राज्य	ग्रामीण (Rural)	शहरी (Urban)
भारत		
पुरुष	85.4	78.6
महिला	45.6	20.9
कुल	66.2	51.1
बिहार		
पुरुष	86.9	75.7
महिला	28.9	12.5
कुल	59.2	48.4

© BSTBPC Not to be Published

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग रिपोर्ट 2001

बेरोजगारी के प्रकार :

बेरोजगारी किसी भी देश के लिए एक बड़ी समस्या है जिसके कारण हमारी श्रम शक्ति का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है।

भारत एवं बिहार के संदर्भ में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी पायी जाती है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी की प्रकृति में अंतर पाया जाता है जो मुख्य रूप से इस प्रकार देखा जा सकता है–

ग्रामीण बेरोजगारी
- मौसमी बेरोजगारी
- छिपी हुई बेरोजगारी
- प्रच्छन्न बेरोजगारी

शहरी बेरोजगारी
- शिक्षित बेरोजगारी
- औद्योगिक बेरोजगारी
- तकनीकी बेरोजगारी

नीचे सारणी (2) में बेकार श्रम-शक्ति (ग्रामीण व शहरी) की प्रतिशत मात्रा को भारत एवं बिहार राज्य के स्तर पर दिखाया गया है।

सारणी-2

भारत एवं बिहार में ग्रामीण तथा शहरी बेरोजगारी दर
1999 – 2000
बेरोजगारी दर श्रमशक्ति के प्रतिशत में

देश/राज्य	ग्रामीण (Rural)	शहरी (Urban)
भारत		
पुरुष	7.20	7.30
महिला	7.00	9.40
कुल	7.20	7.70
बिहार		
पुरुष	7.20	8.70
महिला	6.20	13.50
कुल	7.00	9.30

© BSTBPC Not to be Published

स्रोत–योजना आयोग दसवीं पंचवर्षीय योजना Vol-1, Page-165

उपरोक्त बेरोजगारी के प्रकार को हम इस प्रकार देखेंगे–

ग्रामीण बेरोजगारी

मौसमी बेरोजगारी

मौसम में परिवर्तन द्वारा उत्पन्न बेकारी को **मौसमी बेरोजगारी** कहते हैं। खेती के मौसम में काम मिलना और खेती के मौसम न होने के कारण काम न मिलने की स्थिति को मौसमी बेरोजगारी माना जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी मुख्य रूप से कृषि-क्षेत्र में पायी जाती है। भारत की कृषि **मौनसून** पर निर्भर है, जो हमेशा परिवर्तित-रूप में रहती है जिसको हम सूखा या बाढ़ के रूप में पाते हैं।

चित्र : 4.1

© BSTBPC Not to be Published

काम धंधे की उम्मीद पर अन्य काम करते लोग

भारतीय कृषि एक मौसमी व्यवसाय है। चूँकि कृषि-कार्य विभिन्न चरणों में बंटा होता है–जैसे-**रोपनी, पटौनी, निकौनी** तथा **कटनी** इत्यादि। कृषि के प्रत्येक चरण के पश्चात् कृषक-मजदूर बेकार बैठ जाते हैं, क्योंकि गाँव में इस समयावधि के लिए कृषकों के पास अन्य वैकल्पिक काम की कमी पायी जाती है और ऐसी परिस्थिति में ही मौसमी बेरोजगारी का जन्म होता है।

छिपी (प्रच्छन्न) हुई बेरोजगारी :

प्रच्छन्न बेरोजगारी के अन्तर्गत लोग नियोजित प्रतीत होते हैं, उनके पास भूखण्ड होता है, जहाँ उन्हें काम मिलता है, ऐसा प्रायः कृषिगत काम में लगे परिजनों में होता है। किसी काम में पाँच लोगों की आवश्यकता होती है लेकिन उनमें आठ लोग लगे होते हैं। इनमें तीन लोग अतिरिक्त हैं, ये तीनों उसी खेत में काम करते हैं जिसपर पाँच लोग काम करते हैं। इन तीनों द्वारा किया गया अंशदान पाँच लोगों द्वारा किए गये योगदान में वृद्धि नहीं करता, यानि कुल

उत्पादकता में वृद्धि नहीं हो पाती है। अगर उन पाँच लोगों में से तीन लोगों को हटा भी दिया जाए तो खेत की उत्पादकता में कोई कमी नहीं आएगी। खेत में पाँच लोगों के काम की आवश्यकता है और तीन अतिरिक्त लोग प्रच्छन्न (अदृश्य) रूप से लगे रहकर नियोजित होते हैं। प्रच्छन्न बेरोजगारी की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है।

शहरी बेरोजगारी

शिक्षित बेरोजगारी :

शिक्षा सुविधाओं का प्रसार तथा दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति के कारण शिक्षित बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न होती है, अर्थात् पढ़े-लिखे लोगों को जब रोजगार नहीं मिलता तो इसे **'शिक्षित बेरोजगार'** की संज्ञा दी जाती है। आज **मैट्रिक, स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्रीधारी अनेक युवक-युवतियाँ** रोजगार पाने में असमर्थ हैं जो शिक्षित बेरोजगार की श्रेणी में शामिल हैं। बिहार में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या अधिक है।

औद्योगिक बेरोजगारी :

© BSTBPC Not to be Published

वर्त्तमान दौर औद्योगिक विकास का दौर है। औद्योगिक प्रसार का ढाँचा आधुनिक तकनीक पर आधारित होने के कारण मानव श्रम-शक्ति का उपयोग कम होता है। फलस्वरूप औद्योगिक बेरोजगारी पनपती है। प्राय: ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम-शक्ति, रोजगार प्राप्ति हेतु शहर की ओर आते हैं, परंतु उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता है। साथ ही साथ उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की छँटनी भी बढ़ती मशीनीकृत व्यवस्था में तेजी से जारी है जिससे औद्योगिक बेरोजगारों की संख्या शहरी क्षेत्रों में बढ़ रही है।

तकनीकी बेरोजगारी :

वर्त्तमान समय में तकनीकी परिवर्त्तन के फलस्वरूप इस तरह की बेरोजगारी शहरी क्षेत्रों में पायी जाती है। आधुनिक-युग में नए-नए तकनीक के कारण पूर्व में कार्यरत कर्मियों की छँटाई कर दी जाती है जैसे- कपड़ा मिलों ने बड़ी संख्या में **हैण्डलूम-बुनकरों** को बेकार बना दिया है। बिहार के **भागलपुर, गया** इत्यादि जिलों में मशीनी उत्पादन क्रिया के कारण परम्परागत हैण्डलूम में लगे लोगों में तकनीकी बेरोजगारी फैली है।

तकनीकी बेरोजगारी के अन्तर्गत ये भी देखा गया है कि एक ओर तकनीकी कुशलता प्राप्त लोगों के बीच बेरोजगारी है तो दूसरी ओर आर्थिक संवृद्धि के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल की कमी भी है।

आओ बच्चों उपर्युक्त प्रकार की बेरोजगारी को एक कहानी से समझें :

कहानी

आओ बच्चों तुम्हें एक गाँव की कहानी के द्वारा बेकारी के विभिन्न प्रकारों के बारें में बतलाते हैं। बिहार का एक गाँव है जिसका नाम **गोबिन्दपुर** है। यह नवादा जिला का एक प्रखण्ड है। यह काफी पुराना प्रखण्ड है। इसकी सीमाएँ झारखण्ड राज्य से सटी हुई है। इस गाँव की विशेषता है कि यहाँ एक बरसाती नदी भी है जिसका नाम सकरी नदी है। कृषि के लिए सिंचाई का कोई साधन नहीं है। इस गाँव में **नहर, आहर, पैन, झरना, डैम** इत्यादि कुछ भी नहीं है। सिंचाई का कोई ठोस उपाय नहीं है। गाँव में बिजली है परन्तु बहुत कम समय अर्थात् एक-आधे घंटे तक ही रहती है वह भी पूरे गाँव में नहीं। ऐसी परिस्थिति में यहाँ की कृषि पूर्ण-रूपेण प्रकृति के मौनसून पर ही निर्भर करती है।

इस गाँव की आबादी लगभग आठ हजार है जिसमें सभी जातियों का मिश्रण है। गाँव के लोगों की मुख्य पेशा कृषि मजदूरी एवं छोटे व्यापार है। गाँव के एक परिवार के मुखिया का नाम **रामधनी** है। इसके तीन पुत्र, दो पुत्रियाँ हैं। तीन पुत्रों में दो पिता के काम में सहयोग करता है। रामधनी का मुख्य पेशा अपनी खेती तथा दूसरे के खेतों में मजदूरी करना है। अपनी खेती मात्र सात कट्ठा जमीन पर करता है। मुख्य फसल के रूप में धान तथा गेहूँ उपजाता है। कभी-कभी पत्नी मालती देवी तथा दो पुत्र **विजय** एवं **अजय** काम करता है। फसल के समय में दो माह काम कर बैठ जाते हैं क्योंकि बरसात के समय इनके पास कोई काम नहीं होता। फिर इनकी आवश्यकता कटनी के समय में होती है। यानि यह परिवार कृषि में छिपे हुए बेकारी की सामना करता है। बिना दो पुत्र के भी यह परिवार उतना अनाज उत्पादन करता है जितना स्वयं एवं पत्नी के साथ काम करके करता था। **विजय** एवं **अजय** काम के अभाव में परिवार को सहयोग करता है। दोनों भाई अशिक्षित हैं। एक बार दोनों भाई काम के लिए कलकत्ता चले गये और एक चमड़े के उद्योग में काम करने लगे। पहले तो वे वहाँ मजदूरी करते थे फिर जब औद्योगीकरण के कारण नई तकनीक का मशीन आ गया तो उन्हें वहाँ से निकाल

© BSTBPC Not to be republished

दिया गया क्योंकि वे मशीनी काम नहीं जानते थे। फलस्वरूप फिर वे बेकार हो गये। यहाँ पर दोनों भाई को तकनीकी शिक्षा न होने के कारण बेकार रहना पड़ा। यदि वे प्रशिक्षित होते तो शायद ऐसी बातें न होती। इस दशा में दोनों भाई **तकनीकी बेरोजगारी** के शिकार हो गये।

अब दोनों भाई फिर से गाँव वापस आ गये। परिवार का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। पिता के कंधों पर इनके बहनों की शादियों का भी बोझ बढ़ता जा रहा था। तब दोनों भाई सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण-कार्यक्रम में भाग लेने का मन बना लिया और दोनों प्रखण्ड कार्यालय जाकर प्रशिक्षण के बारे में जाना। दोनों ने साइकिल मरम्मती का प्रशिक्षण ले लिया। प्रशिक्षण के पश्चात् दोनों ने बैंक से ऋण के रूप में 10,000/- (दस हजार) रुपये निकाल कर एक छोटी सी साइकिल-रिपेयरिंग दुकान खोल लिया। गाँव में साइकिल मरम्मती की कोई और दुकान न थी नतीजा यह हुआ कि दोनों भाई की मेहनत ने इस गाँव की दुकान में रंग लाई और काम करने लगा। धीरे-धीरे बैंक का कर्ज भी अदा होने लगा। इस प्रकार यहाँ पर बचे दोनों भाइयों ने **स्वरोजगार** के माध्यम से अपनी आय बढ़ाई और गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल कर एक सफल रोजगार युवक के रूप में अपनी पहचान बना लिया। अब गाँव के सभी लोग **'अजय-विजय'** दुकान को जानने लगे।

© BSTBPC Not to be Published

इस कहानी के माध्यम से आपने देखा कि किस प्रकार दो बेकार नवयुवक विभिन्न प्रकार के बेकारी को झेला फिर सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम से कैसे लाभान्वित हुआ ।

बेकारी का जन्म :

आपने इस अध्याय में बेकारी क्या है, तथा बेकारी के विभिन्न प्रकारों को जाना। अब हम आगे यह जानने की कोशिश करेंगे कि आखिर वे कौन-कौन से कारण हैं जिसके कारण बेकारी जन्म लेती है?

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग **68** प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। इनकी आजीविका का मुख्य आधार कृषि और कृषि संबंधी कार्य है जो मुख्यत: मौनसून पर आधारित है जिसमें बेरोजगारी के विभिन्न रूप तो हम देखते ही हैं साथ में अन्य कारणों से भी बेकारी का जन्म होता है जो निम्न हैं-

1. अत्यधिक जनसंख्या :

भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती हुई वर्तमान समय (2001) में **1.02 करोड़** संख्या को पार कर चुकी है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण विभिन्न प्रकार की बेकारी जन्म ले रही है। जनसंख्या बढ़ने के कारण गाँवों और शहरों में भी बेकारी तेजी से बढ़ रही है जिसे संवाद में हम **'ग्रामीण बेरोजगारी'** और **'शहरी बेरोजगारी'** कहते हैं। विभिन्न प्रकार के बेकारी को हम निम्न शब्दावलियों में व्यक्त करते हैं– **मौसमी बेकारी, छिपी हुई बेकारी, शिक्षित बेकारी, औद्योगिक और तकनीकी बेकारी** इत्यादि।

2. अशिक्षा :

वर्तमान भारतीय आबादी का आज भी **(2001) 34.62** प्रतिशत लोग अशिक्षित है। जिसमें बिहार सबसे नीचे पायदान पर है जहाँ अशिक्षितों की संख्या **53.0** प्रतिशत है।

अशिक्षा के कारण भी बेकारी की दर में वृद्धि देखी जाती है विशेषत: महिलाओं में शिक्षा की कमी के कारण महिला बेरोजगारों की संख्या अत्यधिक है। ग्रामीण महिलाओं की

© BSTBPC Not to be Published

चित्र : 4.2

अकुशल अशिक्षित महिलाएँ शिक्षा ग्रहण करते हुए

श्रम–शक्ति को नियोजित रोजगार नहीं मिल पाता है और वे अनियोजित रूप से कम मजदूरी पर काम करने को विवश होती हैं। अनियोजित रूप में पाये गये रोजगार में अनिश्चितता होती है और वे किसी समय काम से निकाले जा सकते हैं।

3. कृषि का पिछड़ापन :

भारत कृषि प्रधान देश होने के बावजूद यहाँ की कृषि पिछड़ी हुई है जिसका मुख्य कारण कृषि का मौनसून पर आधारित होना है जो प्रतिवर्ष बिल्कुल ही परिवर्त्तित और अनिश्चित रहती है। कहीं **सुखाड़** तो कहीं **बाढ़** का प्रकोप हमेशा बना रहता है। बिहार इसका एक ज्वलंत उदाहरण है। उत्तरी बिहार में बाढ़ और दक्षिणी बिहार को अक्सर सुखा की स्थिति का सामना करना पड़ता है। इस वर्ष कोसी की बाढ़ का तांडव इसका ज्वलंत उदाहरण है। उत्तरी बिहार में बागमती और अधवारा समूह की नदियाँ भी वर्षों से अपने भीषण बाढ़ के प्रकोप से कृषि को प्रभावित करती रही है। इन कारणों से बिहार में कृषि क्षेत्र को काफी नुकसान उठाना पड़ता है।

चित्र : 4.3

कृषि के परम्परागत तरीके आज भी प्रचलित हैं।

© BSTBPC Not to be Published

इसके अतिरिक्त खेती को सिंचिंत करने के कृत्रिम साधन जैसे–**नहर, नलकूप, कुएँ, तालाब** इत्यादि भी परम्परागत रूप में विद्यमान है जो कृषि विकास को धीमा करते हैं। सिंचाई के आधुनिक तकनीक का उपयोग एवं उसका विकास नहीं हो पाया है।

कृषि में अभी भी पुराने यंत्रों व मशीनों का प्रयोग हो रहा है जिसके कारण भी भारतीय कृषि में व्यापक रूप से बेकारी पनपती है।

4. कृषि पर जनसंख्या का अत्यधिक बोझ :

भारत की जनसंख्या का आधे से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है जिसके कारण भारतीय जनसंख्या का जीविकोपार्जन का मुख्य पेशा खेती या कृषि है। खेती पर लोगों का अत्यधिक बोझ के कारण अन्य व्यवसाय जैसे–**उद्योग**, **व्यापार** एवं **सेवा** के अन्य क्षेत्रों पर जनसंख्या का बोझ काफी कम है जिसके कारण कृषि–क्षेत्र में **'छिपी-बेरोजगारी'** भी देखी जाती है, फलस्वरूप ग्रामीण बेरोजगारी बढ़ती है।

चित्र : 4.4

खेत में अधिसंख्यक रूप से काम करती महिलाएँ छिपी बेरोजगारी का द्योतक

5. औद्योगीकरण का अभाव :

भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण उद्योगों का विस्तार अन्य विकसित देशों की तुलना में काफी कम हुआ है जिसके कारण उद्योगों का व्यापक विस्तार नहीं हो पाया है। दूसरी ओर ऊर्जा और संसाधनों की कमी इसके विकास की गति को धीमा बनाये हुए हैं। शिक्षित व प्रशिक्षित आबादी उद्योग क्षेत्र में रोजगार चाहती है जहाँ रोजगार की कमी होती है दूसरी ओर मशीनीकृत उद्योगों में छँटनी भी औद्योगिक क्षेत्र में बेरोजगारी को जन्म देती है।

© BSTBPC Not to be Published

बिहार क्षेत्र में विगत दशकों में जिस किसी भी उद्योग का विकास हुआ वह अब विभाजित बिहार के **झारखण्ड** राज्य में चला गया है। **15 नवम्बर, 2000** में अविभाजित बिहार से झारखण्ड राज्य के गठन से राज्य के औद्योगिक क्षेत्रों में कमी आई क्योंकि सर्वाधिक औद्योगिक नगर जैसे जमशेदपुर, बोकारो, राँची, धनबाद आदि झारखण्ड राज्य में चले गये। यहाँ कृषि–आधारित उद्योगों का विकास अभी तक नहीं हो पाया है। इस कारण शेष बिहार में कृषि–आधारित उद्योगों की कमी बेकारी को बनाये हुए है।

6. पूँजी का अभाव :

भारत में प्रतिव्यक्ति आय के निम्न स्तर के कारण **'पूँजी का निर्माण-दर'** भी काफी कम है, जिसके कारण कृषि तथा अन्य उद्योगों में वांछित पूँजी का निवेश नहीं किया जा रहा है जिसके कारण प्रत्येक स्तर पर बेकारी, देश एवं राज्य में फैल रही है।

7. प्रशिक्षित श्रम-शक्ति का अभाव :

अशिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में भारतीय मजदूर आधुनिक मशीनों से रू-ब-रू नहीं हो पाते हैं फलस्वरूप तकनीक-आधारित रोजगार जैसे–कम्प्यूटर-कार्य, प्रबंधन कार्य, भारी मशीन आधारित कार्य क्षेत्र में भागीदारी नहीं कर पाते हैं जिससे बेकारी का जन्म होता है।

चित्र : 4.5

ऐसे प्रशिक्षित श्रमशक्ति का अभाव पायी जाती है

© BSTBPC Not to be Published

बेकारी समाप्त करने अथवा रोजगार बढ़ाने के उपाय

बच्चो ! इससे पहले आपने बेकारी के जन्म के विभिन्न कारणों को जाना। अब हम इसके समाप्त करने अथवा रोजगार बढ़ाने के उपायों की चर्चा करेंगे।

बेकारी जो भारत में एक विकट समस्या बनी हुई है जिसके निराकरण या मुक्ति के लिए देश एवं राज्य स्तर पर सरकारी व गैर-सरकारी उपायों की आवश्यकता है। बेकारी की समस्या के निदान के लिए निम्न प्रयास किये जा सकते हैं–

I. सरकारी प्रयास

II. गैर-सरकारी प्रयास

I. सरकारी प्रयास :

बेकारी की समस्या के प्रति सरकार प्रारंभ से ही सक्रिय रही है। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत '**न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम**', '**क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम**', '**काम के बदले अनाज**' तथा '**निश्चित रोजगार योजना**' इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण योजना चलायी गयी थी। पुनः छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत निर्धनता एवं रोजगार संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों को मिलाकर कई कार्यक्रम चलाये गए थे जिनमें '**समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम**', '**ग्रामीण भूमिहीन रोजगार कार्यक्रम**' तथा '**जवाहर रोजगार योजना**' जैसे कई कार्यक्रम चलाये गये जिसका सीधा प्रभाव बेकारी (बेरोजगारी) कम करने पर पड़ा जिसके फलस्वरूप देश में निर्धनता की मात्रा घटी तथा रोजगार के नए-नए अवसर उपलब्ध हुए।

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा विभिन्न राज्यों में बेकारी खत्म करने हेतु चल रहे कार्यक्रम को हम नीचे बिंदुवार देखेंगे-

- **ग्रामीण युवा स्वरोजगार प्रशिक्षण योजना [TRY SEM]**
- **ग्रामीण महिला एवं बाल विकास योजना [DWCRA-1982]**
- **जवाहर ग्राम समृद्धि योजना [JGSY-1989]**

2006 से उपरोक्त तीनों को मिलाकर "**संपूर्ण राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 2006**" संचालित है जिसके कार्यान्वयन से बेरोजगारी की संख्या में कमी आयी है।

समन्वित विकास कार्यक्रम	–	IRDP
राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम	–	NREP
ग्रामीण भूमिहीन रोजगार	–	RLEGP
जवाहर रोजगार योजना	–	JRS
ग्रामीण युवा स्वरोजगार प्रशिक्षण योजना	–	TRYSEM
ग्रामीण महिला एवं बाल विकास योजना	–	DWCRA

© BSTBPC Not to be Published

रोजगार हेतु सरकारी कार्यक्रम

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना

National Rural Employment Guarantee Yojana (NAREGA)

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का प्रारंभ 2 फरवरी, 2006 को प्रधानमंत्री द्वारा भारत के 27 राज्यों के 2000 जिलों में 80,000 ग्राम पंचायत में लागू किया गया जिसमें बिहार के कुल 38 जिलों में से 23 जिलों में लागू किया गया। वर्तमान में यह योजना का नाम परिवर्तित कर **'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना'** करके 15 अगस्त 2006 से संपूर्ण देश में लागू कर दी गयी है।

इसके अन्तर्गत निम्न बातें आती हैं–

1. प्रत्येक परिवार को एक वित्तीय वर्ष में 100 दिनों की रोजगार दी गयी है।
2. न्यूनतम मजदूरी प्रतिव्यक्ति 60 रु० निर्धारित है।
3. 15 दिनों तक रोजगार न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता का प्रावधान है।
4. रोजगार में 33% महिलाओं की भागीदारी।
5. कार्य के दौरान श्रमिक की आकस्मिक मृत्यु होने पर 25,000/– रु० क्षतिपूर्ति के रूप में दिया जायगा ।

© BSTBPC Not to be Published

चित्र : 4.8

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के अंतर्गत कार्य करते लोग

II. गैर–सरकारी उपाय :

भारत में बेकारी के स्वरूप और कारणों को देखते हुए इसका निराकरण केवल सरकारी प्रयासों से संभंव नहीं है बल्कि इसे दूर करने के लिए सामुदायिक स्तर पर समूह बनाकर, स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न कर तथा कई **गैर सरकारी संगठनों (Non Governmental Organisation)** व **स्वयं सहायता समूह (Self Help Group)** बनाकर किया जाना चाहिए।

वर्तमान में गैर–सरकारी उपायों में ग्रामीण स्तर पर बेकारी दूर करने के कई सरल एवं सुगम उपाय अपनाये जा सकते हैं जो निम्न हैं–

(क) कुटीर उद्योगों का विस्तार

छोटे–छोटे उद्योग जिनमें मशीन का कम प्रयोग हो और कम पूँजी पर चलाये जाते हों उस उद्योग को **कुटीर उद्योग** कहते हैं। व्यक्ति कृषि क्षेत्र में कार्य करते हुए छिपी हुई बेरोजगारी (अदृश्य बेकारी) का शिकार होता है। ऐसी स्थिति में कृषि पर से अनावश्यक श्रमिकों का बोझ कम कर कुटीर उद्योग में लगाया जा सकता है। परिवार के सभी लोगों को काम उपलब्ध करवाकर बेकारी कम की जा सकती है।

© BSTBPC Not to be Published

चित्र : 4.7

घर के काम निपटाने के बाद हाथ से सूत काटती हुई एक ग्रामीण महिला

(ख) स्वरोजगार :

भारत में व्यापक रूप में फैली बेकारी को दूर करने का सबसे प्रभावकारी उपाय–**'स्वरोजगार का निर्माण'** है। इसमें व्यक्ति अपने स्तर से संसाधन जुटाकर रोजगार सृजित करता ही है साथ ही साथ स्वरोजगार को बढ़ावा देने हेतु सरकारी स्तर पर अनेक योजनाओं के द्वारा भी पूँजी एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है। इस कारण ग्रामीण बेरोजगारी और शहरी बेरोजगारी में तेजी से कमी की जा सकती है। विशेषत: शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में कमी करने हेतु स्वरोजगार काफी कारगर उपाय है।

चित्र : 4.8

प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा स्वरोजगार का सृजन

© BSTBPC Not to be Published

बेकारी का प्रभाव

बेकारी के कारण समाज में अनेक **सामाजिक** और **आर्थिक** विकृतियाँ फैलती हैं।

सामाजिक प्रभाव

बेकारी का सीधा असर व्यक्ति के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर पर पड़ता है जिसे निम्न रूप से दर्शाया गया है–

● जनशक्ति संसाधन की बर्बादी

बेरोजगारी के कारण मानव शक्ति का दुरुपयोग होता है जैसे कृषि के क्षेत्र में एक परिवार के चार लोग खेत में काम कर रहे होते हैं और पुन: उसी परिवार के अन्य सदस्य काम करने लायक हो जाते हैं तो वे भी उसी खेत में अपना सहयोग देना शुरू कर देते हैं जिसके कारण सीमांत उत्पादकता में

बेरोजगारी का सामाजिक प्रभाव
- जन-शक्ति संसाधन की बर्बादी
- हीन भावना का जन्म
- सामाजिक कुरीतियों का बढ़ना
- पलायन की प्रवृत्ति का जन्म

वृद्धि नहीं होती है। किन्तु देखने में यह लगता है कि परिवार के सभी व्यक्ति खेती में लगे हुए हैं। यह श्रमशक्ति की बर्बादी को दर्शाता है।

● हीन भावना का जन्म

बेरोजगार व्यक्ति रोजगार में लगे रहने वाले लोगों की तुलना में अपने को हीन-भावना से देखना शुरू कर देते हैं। फलस्वरूप उनका मनोवैज्ञानिक-स्तर गिरता चला जाता है और वे अपने को समाज में एक बोझ स्वरूप देखना शुरू कर देते हैं जिसका प्रभाव अन्य सभी बेरोजगारों पर भी पड़ने लगता है।

● सामाजिक कुरीतियों का बढ़ना

बेरोजगारी के कारण **चोरी**, **डकैती**, **छीना-झपटी**, **ठगी**, **दहेज** इत्यादि जैसे गलत प्रथा का जन्म बेरोजगारों के बीच हो जाता है जिसका प्रभाव समाज के ऊपर पड़ता है।

● पलायन की प्रवृत्ति का जन्म

व्यक्ति बेरोजगार होने के कारण रोजगार की खोज में अपने पैतृक-स्थान छोड़कर अन्य स्थान पर जाने को मजबूर हो जाता है जिसके कारण वे अपने घर, परिवार, समाज और संस्कृति से तो दूर हो ही जाते हैं साथ ही साथ में कई स्तर पर भी उपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है जिसके फलस्वरूप वे कम मजदूरी पर काम करने को विवश होते हैं। बिहार में ऐसी स्थिति ज्यादा देखी जाती है। अतः पलायन स्थाई रोजगार की गारंटी नहीं देता है।

© BSTBPC
Not to be Published

आर्थिक प्रभाव

● प्रतिव्यक्ति आय की कमी

बेकारी की अवस्था में **प्रतिव्यक्ति आय** कम रहती है जो कि व्यक्ति के आर्थिक पक्ष को प्रभावित करता है।

● निम्न जीवन-स्तर

प्रतिव्यक्ति आय में कमी के कारण उसका **रहन-सहन**, **खान-पान**, **भेष-भूषा** निम्न स्तर का होता है फलस्वरूप व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है।

बेरोजगारी का आर्थिक प्रभाव

- प्रतिव्यक्ति आय की कमी
- निम्न जीवन-स्तर
- आर्थिक मंदी का खतरा
- कर्ज-बोझ में बढ़ोत्तरी
- संसाधन का उचित उपयोग न होना

आर्थिक मंदी का खतरा

किसी अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण विकास पर बेकारी का अहितकर प्रभाव पड़ता है। बेरोजगारी में वृद्धि **मंदी ग्रस्त** अर्थ व्यवस्था का सूचक है। यह संसाधनों की बर्बादी भी करता है जिन्हें अन्य परिस्थितियों में उपयोगी ढंग से नियोजित किया जा सकता है। यदि लोगों को संसाधन के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सका तो स्वाभाविक रूप से वे **अर्थव्यवस्था** पर बोझ बनकर रह जायेंगे। देश की अर्थनीति का यह दायित्व होता है कि वह बेरोजगारी के बोझ को कम करे ताकि अर्थव्यवस्था स्वस्थ हो सके ।

संसाधनों का उचित उपयोग न होना

कम पूँजी के कारण प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अर्थव्यवस्था में व्यापक रूप में नहीं किया जा सकता है जो कि बेरोजगारी का मूल लक्षण है।

सारांश

बेकारी देश की व्यापक एवं गंभीर समस्या है। देश का कोई भी क्षेत्र या समुदाय इससे अछूता नहीं है। इसका स्वरूप संरचनात्मक है। यह अर्थव्यवस्था की अपर्याप्त उत्पादन-क्षमता तथा पूँजी स्टाक में धीमी-वृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। यह कोई काल्पनिक समस्या नहीं है जो स्वतः समय के साथ हल हो जाएगी।

इस समस्या के विभिन्न रूप और पहलू हैं। ग्रामीण बेरोजगारी एवं शहरी बेरोजगारी इसके मुख्य अवयव हैं। इस अवयव के अन्तर्गत ही **मौसमी बेरोजगारी, छिपी हुई बेरोजगारी, शिक्षित बेरोजगारी, औद्योगिक बेरोजगारी, तकनीकी बेरोजगारी** इत्यादि मुख्य रूप से आते हैं। इस प्रकार की बेकारी ग्रामीण क्षेत्र में अधिक पाया जाता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण आधारभूत संरचना का विकास न होना एवं संसाधनों का प्रचुर मात्रा में उपयोग न करना बेकारी के विभिन्न आयामों को जन्म देता है। इसके निराकरण हेतु प्रत्येक हालत में पूँजी-निर्माण दर में वृद्धि कर ही निवेश की मात्रा बढ़ाई जा सकती है जो कि बेरोजगारी दूर करने का मूर्त रूप है। केन्द्र और राज्य स्तर पर बेकारी दूर करने हेतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ही सतत् प्रयास किये जा रहे हैं। यह प्रयास अब सकारात्मक रूप लेने लगी है और धीरे-धीरे बेकारी की समस्या हल होने लगी है।

© BSTBPC Not to be Published

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें।

1. **देश की प्रमुख आर्थिक समस्या है?**
   (क) उच्चशिक्षा
   (ख) खाद्यान्न की प्रचुरता
   (ग) क्षेत्रीय समानता
   (घ) गरीबी तथा बेकारी
2. **भारत में ग्रामीण क्षेत्र में पाई जाती है?**
   (क) शिक्षित बेकारी
   (ख) औद्योगिक बेकारी
   (ग) अदृश्य बेकारी
   (घ) चक्रीय बेकारी
3. **बेकारी वह स्थिति है जब?**
   (क) पूर्णतः इच्छा से काम नहीं करते।
   (ख) हम आलस्य से काम नहीं करते।
   (ग) हमें इच्छा एवं योग्यता होते हुए भी काम नहीं मिलता।
   (घ) हम अशिक्षित एवं अंपग होते हैं।
4. **बिहार में पाई जानेवाली बेरोजगारी है?**
   (क) घर्षणात्मक
   (ख) चक्रीय
   (ग) अदृश्य
   (घ) इनमें से कोई नहीं
5. **बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में पाई जाती है?**
   (क) औद्योगिक बेकारी
   (ख) चक्रीय बेकारी
   (ग) अदृश्य एवं मौसमी बेकारी
   (घ) इनमें से कोई नहीं
6. **बिहार में अशिक्षितों की संख्या करीब निम्न में कितना प्रतिशत है?**
   (क) 53 प्रतिशत
   (ख) 40 प्रतिशत
   (ग) 65 प्रतिशत
   (घ) 47 प्रतिशत

© BSTBPC Not to be Published

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. बेकारी वह स्थिति है जब काम चाहनेवाले तथा योग्य व्यक्ति को रोजगार .... नहीं होता।
2. गरीबी तथा .... भारत की प्रमुख समस्याएँ हैं।
3. ऐच्छिक बेकारी उस स्थिति को कहते हैं जब कोई व्यक्ति प्रचलित मजदूरी पर काम .... चाहता है।

4. छिपी हुई बेकारी की स्थिति में श्रमिक की सीमांत उत्पादकता नगण्य या .... होती है।
5. भारत में शिक्षित बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण दोषपूर्ण .... है।
6. बिहार में छुपी हुई एवं .... बेकारी पाई जाती है।
7. बिहार में बेरोजगारी का एक कारण .... शिक्षा का अभाव है।

III. सही कथन में टिक (✓) तथा गलत कथन में क्रॉस (×) करें :

1. भारत में बेकारी गंभीर रूप धारण कर रही है।
2. बेकारी वह स्थिति है जब व्यक्ति को इच्छा एवं योग्यता रहते हुए भी रोजगार प्राप्त नहीं होता।
3. भारत में शिक्षित लोगों में बेकारी नहीं है।
4. भारत में रोजगार में लगे व्यक्ति भी न्यून रोजगार के शिकार है।
5. भारत में पिछले वर्षों में रोजगार का अस्थायीकरण हुआ है।
6. भारत में ग्रामीण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अदृश्य बेकारी वर्तमान है।
7. भारत में शिक्षित लोगों में बढ़ती हुई बेकारी चिंता का विषय नहीं है।
8. बेकारी दूर करने की दिशा में पंचवर्षीय योजना आंशिक रूप से सफल हुई है।
9. बिहार में लोग छुपी हुई बेकारी एवं न्यूनरोजगार के शिकार है।
10. बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अदृश्य बेकारी वर्तमान है।
11. बिहार में बेकारी की समस्या लगातार घट रही है।
12. पेशेवर शिक्षा, स्वरोजगार एवं कृषि-आधारित उद्योगों के विकास द्वारा बेकारी दूर करने में मदद मिलेगी ।

IV. लघु उत्तरीय प्रश्न :

(उत्तर 20 शब्दों में दें)

1. आप बेरोजगारी से क्या समझते हैं?
2. छिपी हुई बेकारी से आप क्या समझते हैं?
3. न्यून रोजगार की समस्या का वर्णन करें।
4. भारत में रोजगार प्राप्ति की समस्या का वर्णन करें।
5. शिक्षित लोगों में बढ़ती हुई बेकारी के मुख्य कारण क्या है?

6. शिक्षा को पेशेवर बनाने से आप क्या समझते हैं?
7. बेरोजगारी के चार कारणों का वर्णन करें।
8. बिहार में ग्रामीण बेकारी के समाधान के लिए कुछ उपाय बताएँ।

V. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(उत्तर 100 शब्दों में दें)

1. बेकारी की परिभाषा दें। भारत में बेकारी के प्रमुख कारण क्या है? समाधान के सुझाव दें।
2. भारत में बेकारी की समस्या पर एक लेख लिखें। बेकारी की समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है।
3. भारत में पाई जानेवाली विभिन्न प्रकार की बेकारी का विवरण दे। इसके समाधान के लिए आप क्या सुझाव देंगे।
4. **'समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम'** के विशेष संदर्भ में विभिन्न रोजगार-सृजन कार्यक्रमों का परीक्षण करें। इसके क्रियान्वयन में सुधार के उपाए बताएँ।
5. भारत में शिक्षित बेरोजगारी के कारणों का वर्णन करें। इस समस्या का निराकरण कैसे किया जा सकता है।
6. आप अदृश्य बेकारी से क्या समझते हैं? समाधान के लिए उपाय बताएँ।
7. बिहार में ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या के प्रमुख कारण क्या है? आप इसे कैसे दूर करेंगे?

उत्तर

I. वस्तुनिष्ठ :

(1) घ (2) ग (3) ग (4) ग (5) ग (6) क

II. रिक्त स्थान :

(1) उपलब्ध (2) बेकारी (3) नहीं (4) शून्य
(5) शिक्षा प्रणाली (6) मौसमी (7) पेशेवर

III. सही-गलत :

(1) सही	(2) सही	(3) गलत	(4) सही	(5) सही	(6) सही
(7) गलत	(8) सही	(9) सही	(10) सही	(11) गलत	(12) सही

परियोजना कार्य (Project Work) :

1. आपके क्षेत्र में सबसे अधिक बेरोजगारी किस प्रकार की पायी जाती है उसके कारण को बताते हुए एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
2. आपके आस-पास के किसी एक परिवार में पायी जाने वाली बेकारी पर लेख तैयार करें।
3. चित्रांकन के द्वारा प्रत्येक प्रकार के बेकारी को दर्शायें और इसे दूर करने के उपाय पर निबंध लिखे।
4. ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु क्षेत्र में चलाये जा रहे सरकारी कार्यक्रम का विवरण तैयार करें तथा किसी एक महिला जो स्वरोजगार से जुड़ी हो उसका साक्षात्कार विवरण तैयार करें।

संदर्भ :

- N.C.E.R.T. वर्ग IX अर्थशास्त्र
- भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास -श्रीमति उर्मिला शर्मा
- अर्थशास्त्र - डॉ० सुमन
- भारती भवन - वर्ग IX
- भारत का आर्थिक विकास - डॉ० दीपा श्री
- आर्थिक सर्वेक्षण - 2006-07
- भारत की 2001 जनगणना रिपोर्ट
- गरीबी और अकाल - डॉ० अमर्त्य सेन
- आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य - डॉ० अमर्त्य सेन
- कुरुक्षेत्र-मासिक पत्रिका